श्री श्री गुरुगौराङ्गौ विजयेतां

Shri KESHABJI GOUDIYA MATH
Mathura (U.P.)

श्री प्रेमधाम-देव-स्तोत्रम्

त परिव्राजकाचार्य अष्टोत्तरशतश्री
क्षक श्री श्रीधर देव गोस्वामी महाराज

॥ श्री श्री गुरु गौराङ्गौ विजयतः ॥

* श्री श्री प्रेमधाम-देव-स्तोत्रम् *

परमहंस परिव्राजकाचार्य अष्टोत्तरशत श्री
भक्तिरक्षक श्री श्रीधरदेव गोस्वामी महाराज

श्री चैतन्य सारस्वत मठ
डाकघर—नवद्वीप (नदिया) पश्चिम बंगाल (भारत)

प्रकाशक :
श्री चैतन्य सारस्वत मठ
डाकघर—नवद्वीप (नदिया)
पश्चिम बंगाल (भारत)

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम हिन्दी संस्करण १९८४

मुद्रक :
जनता प्रेस,
४२, पथरियाघाट स्ट्रीट,
कलकत्ता-६

निवेदन

श्री प्रेम-धाम-देव-स्तोत्रम् और उसका हिन्दी भावार्थ पाठकों के सामने है, जिसका समूचा श्रेय इस मूल संस्कृत स्तोत्र के रचयिता भक्ति-रक्षक श्री श्रीधर देव महाराज और प्रेम एवं कृपामूर्ति भगवान श्रीचैतन्य देव, जो राधा भाव में भावित श्रीकृष्ण ही हैं और जो इस कलिकाल में अति दुर्लभ श्रीकृष्ण प्रेम का यत्र-तत्र-सर्वत्र मुक्त हस्त से वितरण करने के लिए ही इस धराधाम पर अवतरित हुए थे, को है। उन्हीं श्री श्रीधरदेव जी महाराज और श्रीमहाप्रभु की अहेतुकी कृपा ने ही मेरे जैसे एक अति ही क्षुद्र प्राणी को जिसको हिन्दी-साहित्य, व्याकरण या निगूढ़ भगवत् भावों और सिद्धान्तों का कुछ भी ज्ञान नहीं है, इस भक्ति तथा प्रेम के भावों से पूर्ण स्तोत्र का हिन्दी भावार्थ लिखने का माध्यम बनाया। मेरा दृढ़ विश्वास है कि श्री चैतन्य देव के जीवन में महाभाव से भावित जो प्रेम की दिव्य तरंगें उच्छलित हो रही थीं, उसका एक कण भी यदि इस छोटी-सी पुस्तिका के माध्यम से किसी भी पाठक को प्राप्त हो गया, तो उनका जीवन धन्य हो जाएगा और मैं भी अपने को धन्य समझूँगा।

इस पुस्तक के प्रथम हिन्दी संस्करण के प्रकाशन में श्री चन्द्रमा शर्मा 'रसेश', सम्पादक, देश और समाज एवं श्री रमाशंकर उपाध्याय का सराहनीय सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ है। अतः मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। पुस्तक में प्रूफ संशोधन में कुछ भूलें रह गई हैं, जिनका शुद्ध रूप दिया गया है।

भाद्रकृष्ण अष्टमी
(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी)
संवत् २०४१
दिनांक २०-८-८४

निवेदक,
श्रीगुरु वैष्णव चरण रज,
दासानुदास,
मोहनलाल सिंघानियाँ

शुद्धि पत्र

पृ०	स्तोत्र	अशुद्ध	शुद्ध
१	१	उदारं	उदार
३	३	वीथिया	वीथियों
६	१०	ादया	दिया
६	११	बे	वे
१६	२२	यन्दिरों	मन्दिरों
१६	२३	राम	रामा—(नन्द)
२५	२६	अभायुक्त	आभायुक्त
२६	३४	अभायुक्त	आभायुक्त
३३	३६	महाप्रमु	महाप्रभु
३७	४३	बार्ता	वार्ता
३६	४५	प्रकाशनन्द	प्रकाशानन्द
४४	५०	सुदर	सुन्दर
४५	५१	श्र	श्री
		क	का
४६	५२	बाह्य	वाह्य
		गुह्य	गुह्य
		पत्रि	पवित्र
४८	५५	श्री राधिका	श्री राधिका

श्री गुरु गौराङ्गौ विजयतः ।

श्री श्री प्रेमधाम-देव-स्तोत्रम्

स्तोत्र—१

देव-सिद्ध-मुक्त-युक्त-भक्तबृन्दवन्दितं
पाप-ताप-दाव-दाह-दग्ध-दुःख-खण्डितम् ।
कृष्ण-नाम-सीधु-धाम-धन्य-दान सागरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ १

भावार्थ—मेरे स्वामी श्री गौर सुन्दर जो कि स्वर्ण की सी आभा लिए हुए हैं और जो दिव्य-प्रेम के भण्डार हैं, उनकी जय-जयकार हो । देवता, सिद्ध योगी, मुक्त तथा दूसरे जो श्री कृष्ण के विशुद्ध भक्त हैं, वे सब जिनकी कीर्ति का अनवरत गान कर रहे हैं और वे उन त्रसित आत्माओं के संताप को तुरन्त दूर कर देते हैं, जो अपने पापों के तापों के कारण इस प्रज्वलित-भव-दावाग्नि में दग्ध हो रहे हैं । जो दिव्य महा परम उदार स्वामी श्री कृष्णनामामृत के आलयस्वरूप हैं, उनकी जय जयकार हो ।

स्तोत्र—२

स्वर्ण-कोटि-दर्पणाभ-देह-वर्ण-गौरवं
पद्म-पारिजात-गन्ध-वन्दिताङ्ग-सौरभम् ।

कोटि-काम-मूर्च्छिताङ्घ्रि-रूप-रास-रङ्गरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥२

भावार्थ—उनके दिव्य देह की आभा कोटि-कोटि स्वर्णिम दर्पणों की आभा को भी फीका बना देती है। जिनके दिव्य शरीर से ऐसी दिव्य सुगन्ध निकल रही है कि उसकी अनुभूतिमात्र से ही अति सुगन्धित कमल तथा पारिजात पुष्प दीनतापूर्वक उनकी भक्ति के गान गाने लगते हैं। कोटि-कोटि कन्दर्प उनके अतुलनीय सौन्दर्य को देखकर अपने दम्भ को भूल जाते हैं और उनके चरण-कमलों में नतमस्तक हो जाते हैं। उनके दिव्य देह तथा अंग-प्रत्यंग से दिव्य रास-प्रेम की धारा बह रही है। आनन्दविभोर हो, मैं अपने स्वामी, जो स्वर्णिम आभा लिए हुए हैं और दिव्य प्रेम के एकमात्र आलय हैं, की अनन्तकीर्ति और विभूतियों का गान कर रहा हूँ। मैं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—३

प्रेम-नाम-दान-जन्य-पञ्च-तत्त्वकात्मकं
साङ्ग-दिव्य-पार्षदास्त्र-वैभवावतारकम्।
श्याम-गौर-नाम-गान-नृत्य-मत्त-नागरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ ३

भावार्थ—पंचम पुरुषार्थ कृष्ण प्रेम की प्राप्ति के साधन कृष्णनामामृत के मुक्त प्रसार व वितरण के लिए जिन्होंने स्वयं ही अपने कायव्यूह से पंचतत्व का रूप धारण कर लिया, उन्होंने दिव्य साङ्गपार्षदास्त्र इस धराधाम पर अपनी पूर्ण विभूति सहित अवतरण किया। यद्यपि वे स्वयं श्यामसुन्दर श्री कृष्ण ही थे, उन्होंने गौर सुन्दर के रूप में पुनीत हरिनाम का दिव्य भाव सहित नृत्य और संकीर्तन करते हुए नदिया की वीथियों में एक साधारण नागरिक की भाँति भ्रमण किया। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी, स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर-सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लास-सहित गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—४

शान्ति-पुर्यधीश-कल्यधर्म्म-दुःख-दुःसहं
जीव-दुःख-हान-भक्त-सौख्यदान-विग्रहम्।
कल्यघौघ-नाश-कृष्ण-नाम-सीधु-सञ्चरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ४

भावार्थ—कलिकाल की दयनीय दशा से जो अधार्मिक सिद्धान्त तथा विचार धाराएँ फैल गईं, उनके कारण दुःखी अपने भक्त शांतिपुर के स्वामी श्री अद्वैत प्रभु के दुःख को वे सहन

नहीं कर सके। जीवों को उनके संकट से त्राण देने के लिए, अपने भक्त को सुख पहुँचाने के लिए और कलि के विष को शमन करने के लिए वे अपने इस विग्रह में कृष्णनामामृत का मुक्त वितरण करने के लिए प्रगट हुए। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय, मेरे मधुर स्वामी, स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर-सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लाससहित गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—५

द्वीप-नव्य-गांग-बंग-जन्म-कर्म्म-दर्शितं
श्रीनिवास-वास-धन्य-नाम-रास-हर्षितम्।
श्रीहरिप्रियेश-पूज्यधी-शची-पुरन्दरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ५

भावार्थ—उनका दिव्य जन्म और उनकी दिव्य लीलाएँ श्री नवद्वीप धाम में हुईं, जो पुनीत श्री गंगा जी के तट पर स्थित है। उन्होंने दिव्य एवं पुनीत हरिनाम संकीर्तन की भावोल्लासपूर्ण रसमयी धारा बहाकर सबके हृदय को भावविभोर करते हुए श्रीवास के आँगन को धन्य किया। उन्होंने अपने विद्वान पिता श्री मिश्र एवं माता श्री सची देवी का कर्तव्यनिष्ठा पूर्वक सम्मान तथा सत्कार किया एवं अपनी पत्नियों श्री लक्ष्मी-

प्रिया एवं विष्णुप्रिया के तो वे वास्तविक अर्थ में प्राणनाथ ही थे। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर-सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लास सहित गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—६

श्रीशची-दुलाल-बाल्य-बाल-सङ्ग-चञ्चलं
आकुमार-सर्व्व-शास्त्र-दत्त-तर्क-मङ्गलम्।
छात्र-सङ्ग-रंग-दिग्जिगीषु-दर्प-संहरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ६

भावार्थ—श्री सचीदेवी के पुत्र के रूप में दूसरे बच्चों के साथ नटखट बाल-लीलाएँ करने का रसास्वादन उन्होंने किया। यौवन के बिल्कुल आरम्भ काल में ही वे सब शास्त्रों के पारंगत हो गये एवं तत्कालीन न्यायशास्त्र में तो उन्होंने विशेषज्ञता ही प्राप्त कर ली। सार्वजनीन कल्याण के लिए उन्होंने कल्याणदायक भक्तिमार्ग स्थापित किया। जब वे गंगा के तट पर अपने छात्रों के साथ थे, उन्होंने उस समय के एक नामांकित दिग्विजयी पंडित का दर्प भंग किया। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौरसुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लाससहित गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र – ७

बर्ज्य-पात्र-सारमेय-सर्प-सङ्ग-खेलनं
स्कन्ध-वाहि-चौर-तीर्थ-विप्र-चित्र-लीलनम्।
कृष्णनाम-मात्र-बाल्य-कोप-शान्ति-सौकरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ७

भावार्थ—उनकी बाल लीलाएँ अत्यन्त आश्चर्यजनक थीं। पुराने, त्यक्त मिट्टी के बर्तनों, छोटे-छोटे कुत्ते के बच्चों तथा जहरीले सर्पों के साथ वे खेला करते थे। एकबार एक चोर उनके वस्त्रों को चुराने की इच्छा से उनको उठाकर ले गया। तीर्थ भ्रमण करनेवाले एक विप्र को एकबार उन्होंने अपना उच्छिष्ट प्रसाद देकर धन्य किया। जब वे किसी बात पर नाराज एवं निराश होकर बाल्यकोप करते थे, तब केवल हरिनाम के उच्चारणमात्र से वे चुप हो जाते थे। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर-सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लाससहित गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—८

स्नान-गांग-वारि-बाल-संग-रंग-खेलनं
बालिकादि-पारिहास्य-भंगि-बाल्य-लीलनम्।

कूट-तर्क-छात्र-शिक्षकादि-वाद-तत्पर
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ ८

भावार्थ—गंगा स्नान करते समय अपने बाल्यकाल के साथियों के साथ वे भिन्न-भिन्न प्रकार के आश्चर्यजनक खेल खेला करते थे। कभी-कभी परिहासवश तरुण लड़कियों के साथ वे इस ढंग की मीठी बातें करते थे मानो उनको कुछ चिढ़ा से रहे हों। अपने अध्यापकों एवं छात्रों के सामने कभी-कभी वे क्लिष्ट तर्क और वितर्क उपस्थित किया करते थे। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—९

श्रीनिमाइ-पण्डितेति-नाम-देश-वन्दितं
नव्य-तर्क-दक्ष-लक्ष-दम्भि-दम्भ-खण्डितम्।
स्थापितार्थ-खण्ड-खण्ड-खण्डितार्थ-सम्भरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ ९

भावार्थ—देश में परम विद्वान निमाई पण्डित कहकर उनका सम्मान किया जाता था। अपने समकालीन न्याय-

शास्त्रियों के दंभ को अपने तरह-तरह के बुद्धिमत्तापूर्ण और मौलिक तर्कों द्वारा उनके स्थापित सिद्धान्तों को चूर्ण-विचूर्ण करके वे भंजन कर दिया करते थे और पुनः उन्हीं सिद्धान्तों को प्रतिपादित कर दिया करते थे। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर-सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ और उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—१०

श्लोक-गाङ्ग-वन्दनार्थ-दिग्विजीगीषु-भाषितं
व्यत्यलंकृतादि-दोष-तर्कितार्थ-दूषितम्।
ध्वस्त-युक्ति-रुद्ध-बुद्धि-दत्त-धीमदादरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ १०

भावार्थ—माने हुए परम विद्वान पण्डित केशव काश्मीरी द्वारा सद्यः निर्मित और गाये गये माता गंगा भगवती की प्रशंसा के पद्यों के अलंकारजनित व्याकरण के दोष उन्होंने दिखाये। जब उक्त विद्वान ने भिन्न-भिन्न क्लिष्ट तर्कों द्वारा अपने पक्ष को पुष्ट करना चाहा, तब महाप्रभु ने उनके उन तर्कों को खण्ड-विखण्ड कर दिया। यद्यपि महाप्रभु ने उक्त कुंठित बुद्धि पण्डित के मान को भंग किया, किन्तु फिर भी उन्होंने एक

पठित संस्कृत विद्वान के योग्य सम्मान भी दिया। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर-सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ और उनको नमन करता हूँ।

श्लोक—११

सूत्र-वृत्ति-टिप्पनीष्ट-शूक्ष्म-वाचनाद्भुतं
धातु-मात्र-कृष्ण-शक्ति-सर्व्व-विश्व-सम्भृतम्।
रुद्ध-बुद्धि-पण्डितौघ-नान्य-युक्ति-निर्हृतं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ११

भावार्थ—शास्त्रों के सूत्रों के अर्थों का उनका विश्लेषण आश्चर्यजनक, सशक्त तथा सूत्र रूप में होते हुए भी अति ही गहन होता था, जो कि शास्त्र के स्वाभाविक, विस्तृत और व्यापक अर्थ कोप्रकाशित करने में समर्थ होता था। उन्होंने साबित करके दिखाया कि संस्कृत के समस्त धातु वर्ग (करीब ७००० धातु रूप) मूलतः श्रीकृष्ण, जो कि समस्त लोकों के एकमात्र स्वामी हैं, की विविध शक्तियों को ही इंगित करते हैं; तत्कालीन विद्वत्वर्ग इन परिस्थितियों में हतप्रभ से हो जाते थे और अपने निष्कर्षों को महाप्रभु के सामने पुष्ट करने में असमर्थ ही रहते थे। वे उनके सामने आश्चर्यचकित एवं मूकसम बैठे ही रह

जाते थे। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर-सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लास पूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—१२

कृष्ण-दृष्टिपात-हेतु-शब्दकार्थ-योजनं
स्फोट-वाद-शृंखलैक-भित्ति-कृष्ण-वीक्षणम्।
स्थूल-सूक्ष्म-मूल-लक्ष्य-कृष्ण-सौख्य-सम्भरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ १२

भावार्थ—उन्होंने इस सिद्धान्त को स्थापित किया कि विभिन्न शब्दों की ध्वनि और उनके अर्थों के आपस के सम्बन्ध की मूलभित्ति श्रीकृष्ण का दृष्टिपात ही है। उन्होंने कहा कि स्फोटवाद के विद्वान यद्यपि व्याकरण के विभिन्न नियम और उपनियमों का मूलभूत आधार स्फोटवाद को ही मानते हैं, परन्तु तत्वतः श्री कृष्ण की स्वतंत्र इच्छा ही इन सबके पीछे वास्तविक आधारभूत कारण है। सूक्ष्म और स्थूल सभी शक्तियों और उनके विभिन्न क्रियाकलापों का अंतिम उद्देश्य परम पुरुष श्री कृष्ण को उनकी दिव्य लीलाओं में दिव्य आनन्द रस प्रदान करना ही है। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभा-युक्त श्री गौर-सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लाससहित गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—१३

प्रेम-रङ्ग-पाठ-भङ्ग-छात्र-काकु-कातरं
छात्र-सङ्ग-हस्त-ताल-कीर्त्तनाद्य-सञ्चरम् ।
कृष्ण-नाम-सीधु-सिन्धु-मग्न-दिक्-चराचरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ १३

भावार्थ—गया से वापस आने के बाद उनके हृदय में दिव्य प्रेम की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई बाढ़-सी आती रहती थी, जिसके कारण अध्यापन-कार्य को चालू रखना उनके लिए असंभव हो गया था। उनका छात्रवर्ग जो सदा के लिए निमाई पण्डित द्वारा पढ़ाये जाने से वंचित हो गया था, अपने को अति ही दुर्भाग्य-शाली और पतित मानने लगा था और अति ही दीनतापूर्वक और विनम्रतापूर्वक एक शिक्षक के रूप में उनकी अद्भुत प्रतिभा का बखान करता था। महाप्रभु उन छात्रों की इस दशा को देखकर अति ही करुणा अनुभव करते थे और उन्हें आशीर्वाद देते थे। दिव्य भावोन्मादपूर्ण प्रेम से सराबोर, उन्होंने श्रीकृष्ण संकीर्तन का पहला संदेश दिया। श्रीकृष्ण का गुणगान करते हुए वे उनकी अगवानी करते थे और वे गाते हुए, हाथताली बजाते हुए उनके पीछे-पीछे चलते थे। उस भावोन्मादपूर्ण संकीर्तन से चारों दिशाओं में दिव्य प्रेमामृत की बाढ़ आ जाती थी। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभा-

युक्त श्री गौर-सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लाससहित गान करता हूँ और उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—१४

आर्य्य-धर्म्म-पाल-लब्ध-दीक्ष-कृष्ण-कीर्त्तनं
लक्ष-लक्ष-भक्त-गीत-वाद्य-दिव्य-नर्त्तनम् ।
धर्म्म-कर्म्म-नाश-दस्यु-दुष्ट-दुस्कृतोद्धरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ १४

भावार्थ—वे वैदिक धार्मिक सिद्धान्तों का आदर करते थे और अपने गुरु के आदेशानुसार श्री कृष्ण संकीर्तन का प्रचार करते थे। दिव्य प्रेम में विभोर वे दिव्य-भाव नृत्य में उन्मादित रहते थे और कोटि-कोटि भक्त गाते, बजाते, नाचते उनके पीछे-पीछे रहा करते थे। जो पापी और दुष्ट हृदय नर राक्षसगण इस धराधाम पर धर्म तथा पुनीत कृत्यों को अति ही निम्न-स्तर पर पहुँचाने का कारण थे, ऐसे दुष्टों के उद्धार का एकमात्र आधार वे ही थे। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर-सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूं एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—१५

म्लेच्छ-राज-नाम-बाध-भक्त-भीति-भञ्जनं
लक्ष-लक्ष-दीप-नैश-कोटि-कण्ठ-कीर्त्तनम् ।
श्रीमृदङ्ग-ताल-वाद्य-नृत्य-काजि-निस्तरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ १५

भावार्थ—जब म्लेच्छराज ने हरिनाम संकीर्तन में बाधा उपस्थित की, तब महाप्रभु ने रात्रिकालीन संकीर्तन की अगुआई की, जिसमें लाखों मशालें जल रही थीं, कोटि-कोटि कंठों से हरिनाम की ध्वनि निकल रही थी, मृदंग और करताल की मधुर ध्वनि के बीच नाचते, गाते, बजाते अगणित भक्तजन पीछे-पीछे चल रहे थे। उन्होंने काजी का दम्भ भंग कर दिया और उसे निष्प्रभ करने के बाद अन्ततः उसके हृदय को भी जीत लिया। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर-सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ और उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—१६

लक्ष-लोचनाश्रु-वर्ष-हर्ष-केश कर्त्तनं
कोटि-कण्ठ-कृष्ण-कीर्त्तनाढ्य-दण्ड-धारणम् ।

न्यासि-वेश-सर्व्वदेश-हाहुताश-कातरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ १६

भावार्थ—उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक अपने सुन्दर केशों को कटा डाला जबकि लोग इस दृश्य को देखकर शोक से अश्रु बहा रहे थे। जब उन्होंने संन्यास-दण्ड धारण किया, लाखों-लाखों लोग श्रीकृष्ण का गुणगान कर रहे थे। इसके बाद जहाँ-जहाँ लोगों ने उनको संन्यासी वेश में देखा, वे वेदना से कराहने लगे। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर-सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लास-पूर्वक गान करता हूँ और उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—१७

श्रीयतीश-भक्तवेश-राढदेश-चारणं।
कृष्ण-चैतन्याख्य-कृष्ण-नाम-जीव-तारणम् ॥

भाव-विभ्रमात्म-मत्त-धावमान-भूधरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥१७

भावार्थ—योगेश्वर श्री महाप्रभु ने एक भक्त के रूप में भ्रमण करते हुए राढ़ देश (बंगाल) को अपने चरण कमलों से पवित्र किया। वे श्री कृष्ण चैतन्य के नाम से प्रख्यात थे और

उन्होंने सभी बद्ध और पतित जीवों का श्री कृष्ण नाम के माध्यम से उद्धार किया। दिव्य कृष्ण प्रेम भावामृत में उन्मादित की भाँति उन्होंने पृथ्वी में सर्वत्र तीव्रगति से भ्रमण किया और ऐसा लगता था मानो वे भ्राम्यमान स्वर्ण पर्वतराज हैं। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर-सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ और उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—१८

श्रीगदाधरादि-नित्यानन्द-सङ्ग-वर्द्धनं
अद्वयाख्य-भक्त-मुख्य-वाञ्छितार्थ-साधनम्।
क्षेत्रवास-साभिलाष-मातृतोष-तत्परं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ १८

भावार्थ—श्री गदाधर और श्री नित्यानन्द के आ जाने से उनकी भक्तमण्डली में चार चाँद लग गये। भक्तजनों में अग्रगण्य श्री अद्वैत प्रभु की इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए वे भूतल पर अवतरित हुए थे। अपनी माँ की संतुष्टि के लिए उन्होंने स्वीकार किया कि वे उनसे अत्यधिक दूर नहीं जायेंगे और नजदीक ही श्री पुरुषोत्तम क्षेत्र (जगन्नाथ पुरी) में ही रहेंगे। पवित्र

प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर-सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ और उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र – १६

न्यासिराज-नील-शैल-वास-सार्व्वभौमपं
दाक्षिणात्य-तीर्थ-जात-भक्त-कल्प-पादपम्।
राम-मेघ-राग-भक्ति-वृष्टि-शक्ति-सञ्चरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ १६

भावार्थ—जब संन्यासीराज महाप्रभु नीलाचल पहुँचे तब उन्होंने सर्वप्रथम वेदान्त के नामांकित विद्वान वासुदेव सार्वभौम का उद्धार किया और फिर दक्षिण भारत की तरफ प्रस्थान किया, जहाँ भिन्न-भिन्न वेदान्तिक प्रणालियों में मान्यता रखनेवाले लोग वास करते थे। वहाँ उन्होंने कल्पवृक्ष के समान विभिन्न तीर्थस्थानों में रहनेवाले भक्तों की मनोवांछा पूर्ण की। वे श्री रामानन्द राय से मिले, जो भक्ति भावों से प्लावित कर देनेवाले बादल के समान थे और उन्हें वृन्दावन की रागभक्ति की भावोल्लासपूर्ण प्रेमोन्मादमयी प्लावनकारी वर्षा यत्र-तत्र करने की शक्ति प्रदान की। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर-सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ और उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—२०

ध्वस्त-सार्व्व भौम-वाद-नव्यतर्क-शाङ्करं
ध्वस्त तद्विवर्त्त-वाद-दानवीय-डम्बरम् ।
दर्शितार्थ-सर्व्व-शास्त्र-कृष्ण-भक्ति-मन्दिरं
प्रेम-धामदेवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ २०

भावार्थ—जब सार्वभौम ने छल, वितण्डावाद तथा निग्रह आदि भिन्न-भिन्न कौशलों से शंकराचार्य के निर्विशेषवादी और अनीश्वरवादी विवर्तवाद के सिद्धान्त की, जिसका दुर्नीति और पाषण्डी वृत्ति परायण दम्भी लोग समर्थन करते हैं, बार बार पुष्टि करने की चेष्टा की, तब महाप्रभु ने अपने मौलिक और क्षण-क्षण नवायमान तर्कों द्वारा, जो कि वेदों के वास्तविक तथ्यों को पुष्ट करने वाले थे, विवर्तवाद के सिद्धान्त की धज्जी-धज्जी उड़ा दी। महाप्रभु ने उपदेश किया कि समस्त वेद शास्त्र मानों एक मन्दिर है, जहाँ श्रीकृष्ण भक्ति ही स्थापित है। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ और उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—२१

प्रेमधाम-दिव्य-दीर्घ-देह-देव-नन्दितं
हेम-कञ्ज-पुञ्ज-निन्दि-कान्ति-चन्द्र-वन्दितम् ।

नाम-गान-नृत्य-नव्य-दिव्य-भाव-मन्दिरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ २१

भावार्थ—उनका आभायुक्त, दिव्य और दीर्घ श्रीदेह जो कि सुचारु, भव्य और मनोहर अङ्ग-प्रत्यङ्गों वाला था, देवताओं को भी हर्षोन्मादित, चन्द्र-ज्योत्सना को भी मलिन और सैकड़ों स्वर्णकमलों की आभा को भी श्रीहीन बना देने वाला था। जब वे दिव्य हरिनाम-संकीर्तन करते हुए नृत्य करते थे, तब ऐसा मालूम होता था मानो क्षण-क्षण नवायमान दिव्य भावोल्लासपूर्ण प्रेमामृत ने ही मूर्तरूप धारण कर लिया हो। पवित्र प्रेम के एक मात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ और उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—२२

कृष्ण-कृष्ण-कृष्ण-कृष्ण-कृष्णनाम-कीर्त्तनं
राम-राम-गान-रम्य-दिव्य-छन्द-नर्त्तनम्।
यत्र-तत्र-कृष्णनाम-दान-लोक-निस्तरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥२२

भावार्थ— उनकी दक्षिण भारत की तीर्थयात्रा का मूल उद्देश्य वहाँ के लोगों का उद्धार करना ही था। रास्तों के किनारे

मन्दिरों में और दूसरे धार्मिक आश्रमों में वे मधुर ध्वनि से यही गाते रहते थे, "कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे।" कभी-कभी किसी अनिर्वचनीय दिव्य भाव धारा में प्रवाहित होते हुए वे गा पड़ते, "राम-राम" और भावोन्माद में मधुर नृत्य करने लगते। समय, स्थान और परिस्थितियों से ऊपर उठते हुए परम उदारतापूर्वक पवित्र कृष्ण नाम का संकीर्तन करने में नियोजित करके वे यत्र तत्र सर्वत्र जो सामने पड़ता उन सभी का उद्धार कर देते थे। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौरसुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ और उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—२३

गोदवर्य्यवास-तीर-रामानन्द-संवदं
ज्ञान-कर्म्म-मुक्त-मर्म्म-राग-भक्ति-सम्पदम्।
पारकीय-कान्त-कृष्ण-भाव-सेवनाकरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ २३

भावार्थ—गोदावरी के तीर पर रामानन्द राय के साथ अपने प्रसिद्ध वार्तालाप में, जिसको श्री चैतन्यचरितामृत में रामानन्द-सम्वाद की आख्या दी गई है, उन्होंने सिद्ध कर दिया कि किसी की अपनी सबसे प्रिय सम्पत्ति राग भक्ति या प्रभु के

प्रति स्वभाविकी और सहज प्रेमाभक्ति ही हो सकती है, जो कि ज्ञान कर्म से अनावृत हृदय से की जाती है और श्रीकृष्ण, जो कि परकीयामधुर प्रेम रस के एकमात्र स्वामी और प्रेमास्पद हैं, केवल वे ही इस दिव्य भावोल्लासमयी-प्रेम सेवा या भावसेवा के विषयालम्बन हैं अथवा उन्हीं के प्रति यह भाव सेवा की जा सकती है और केवल वे ही इसको पाने के अधिकारी हैं। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्रीगौर सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ और उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—२४

दास्य-सख्य-वात्स्य-कान्त-सेवनोत्तरोत्तरं
श्रेष्ठ-पारकीय-राधिकाङ्घ्रि-भक्ति-सुन्दरम्।
श्रीव्रज-स्वसिद्ध-दिव्य-काम-कृष्ण-तत्परं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ २४

भावार्थ—महाप्रभु ने उपदेश किया कि दास्य भाव से सख्यभाव, वहाँ से वात्सल्य भाव तदुपरान्त मधुर भाव और अन्ततोगत्वा राधारानी के चरणों में विशुद्धभक्ति के माध्यम से मधुरातिमधुर परकीया मधुर भाव द्वारा श्रीव्रजेन्द्रनन्दन की सेवा में जो स्थिति है, वह सर्वोपरि भाव है। दिव्य स्वाभाविक प्रेममय भाव भी, श्रीव्रजेन्द्रनन्दन, व्रज मे श्रीकृष्ण के प्रति अतिविशुद्धाति-

विशुद्ध रूप में प्रकट होकर ही प्रेममयी सफलता की उच्चतम सीमा को प्राप्त होता है, यह प्रेरणा श्रीमहाप्रभु ने दी। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्रीगौर-सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—२५

शान्त-मुक्त-भृत्य-तृप्त-मित्र-मत्त-दर्शितं
स्निग्ध-मुग्ध-शिष्ट-मिष्ट-सुष्ठ-कुण्ठ-हर्षितम्।
तन्त्र-मुक्त-वाम्य-राग-सर्व्व-सेवनोत्तरं
प्रेम-धाम-देवमेव-नौमि-गौर-सुन्दरम्॥ २५

भावार्थ—महाप्रभु ने समझाया कि शान्त भाव में भक्त को संसार भाव से मुक्ति मिल जाती है, दास्य भाव में सेवा-जनित आनन्द एवं तुष्टि मिलती है, सख्य भाव में भक्त प्रभु के सीधे रक्षण में सख्य-सेवाजनित सुख का अनुभव करता है और वात्सल्य भाव में भक्त प्रभु के प्रति पुत्रजनित वात्सल्य सुख का अनुभव करता है। महाप्रभु ने आगे बतलाया कि स्वकीया मधुरभाव में शास्त्रजनित मर्यादाओं के बन्धन के कारण माधुर्य रस के मुक्त उपभोग में तथा उसके चरम विकास में कुछ बाधाएँ रहती हैं, किन्तु जब मधुर भाव शास्त्र के बन्धनों

को तोड़कर आगे बढ़ता है तब वह श्री व्रज के परकीया भाव को पकड़ता है और विशेषकर जब परकीया भाव भी वाम भाव से भावित हो जाता है, तभी वह श्रीकृष्ण को उच्चतम आनन्दरस प्रदान करने में सक्षम होता है। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—२६

आत्म-नव्य-तत्त्व-दिव्य-राय-भाग्य-दर्शितं
श्याम-गोप-राधिकाप्त-कोक्त-गुप्त-चेष्टितम्।
मूर्च्छिताङ्घ्रि-रामराय-बोधितात्म-किङ्करं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ २६

भावार्थ—अति भाग्यवान श्रीरामानन्द राय के सामने महाप्रभु ने स्वयं इस रहस्य को प्रकट कर दिया कि किस तरह वे श्रीनवद्वीप धाम में अपनी नित्य, नवायमान, दिव्य लीलाओं को करने के लिए अवतरित हुए हैं। जब श्री रामानन्द ने प्रत्यक्ष देखा कि किस तरह गोपालक श्री श्यामसुन्दर ही राधा की द्युति और श्रीअंगकान्ति लेकर तथा उन्हीं के रहस्यमय प्रेमभाव में भावित होकर प्रकट हुए हैं, तब वे मूर्च्छित होकर गिर पड़े।

महाप्रभु ने तब स्वयं ही अपने नित्य परिकर को सचेत किया। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभा-युक्त श्रीगौरसुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—२७

नष्ट-कुष्ठ-कूर्म्म-विप्र-रूप-भक्ति-तोषणं
रामदास-विप्र-मोह-मुक्त-भक्त-पोषणम्।
काल-कृष्ण-दास-मुक्त-भट्टथारि-पिञ्जरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ २७

भावार्थ—जगन्नाथ पुरी के कूर्मक्षेत्र में उन्होंने एक ब्राह्मण भक्त को, जो कुष्टी था, आलिंगन किया और तत्क्षण ही उसे एक सुन्दर दिव्य देह की प्राप्ति करवा दी। उन्होंने श्रीकूर्मपुराण का प्रमाण देकर दक्षिण भारत के एक ब्राह्मण का यह भ्रम निवारण कर दिया कि उसकी उपास्या श्रीसीताजी को किसी एक राक्षस ने स्पर्श किया था। उन्होंने दिखाया कि चिन्मय तत्व को जड़ मल दूषित नहीं कर सकता और उन्होंने उसे विशुद्ध भक्ति प्रदान की। मालावार के भट्टथारि सम्प्रदाय के दुर्जनों ने जब अज्ञ ब्राह्मण कालाकृष्ण दास को माया के जाल से फाँस लिया, तब महाप्रभु ने उसकी रक्षा की। पवित्र प्रेम के

एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्रीगौर सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको मैं नमन करता हूँ।

स्तोत्र— २८

रङ्गनाथ-भट्ट-भक्ति-तुष्ट-भङ्गि-भाषणं
लक्ष्म्यगम्य-कृष्ण-रास-गोपिकैक-पोषणम्।
लक्ष्म्यभीष्ट-कृष्ण शीर्ष-साध्य-साधनाकरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ २८

भावार्थ—कावेरी के तट पर अवस्थित श्रीरंग क्षेत्र में, जहाँ के वैष्णव दृढ़तापूर्वक लक्ष्मीनारायण की सेवा को ही अन्तिम उद्देश्य मानते थे, श्री वेंकट भट्ट की सेवा से प्रसन्न होकर श्री श्री महाप्रभु ने सहज और सरल भाव से कह दिया कि श्री कृष्ण की रास लीलाओं को सिर्फ श्री गोपियाँ ही पूर्णरूपेण सहयोग, पोषण एवं रक्षण प्रदान करती हैं। सर्व साधनाओं का अन्तिम साध्य और अभीष्ट लक्ष्य श्री कृष्ण ही हैं। अतएव श्री लक्ष्मीजी भी उनके प्रति आकृष्ट रहती हैं। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—२९

ब्रह्म-संहिताख्य-कृष्ण-भक्ति-शास्त्र-दायकं
कृष्ण-कर्ण-सीधु-नाम-कृष्ण-काव्य-गायकम् ।
श्रीप्रतापरूद्र-राज-शीर्ष-सेव्य-मन्दिरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ २९

भावार्थ—महाप्रभु ने अपने भक्तों को ब्रह्मसंहिता नामक सुप्रसिद्ध ग्रन्थ दिया जो श्रीकृष्ण भक्ति से सम्बन्धित तात्विक सिद्धान्तों से पूर्ण है। दक्षिण भारत के भक्त कवि बिल्व मंगल ठाकुर द्वारा रचित कृष्ण कर्णामृत नामक ग्रन्थ से उन्होंने व्रजलीला का बखान करने वाले पद्यों को प्रेमपूर्वक गाया। राजा प्रतापरुद्र ने उनके चरणकमलों को नमन करके शिरोधार्य किया। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम अभायुक्त श्री गौरसुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूं।

स्तोत्र—३०

श्रीरथाग्र-भक्त-गीत-दिव्य-नर्त्तनाद्भुतं
यात्रि-पात्र-मित्र-रूद्रराज-हृच्चमत्कृतम् ।
गुण्डिचागमादि-तत्त्व-रूप-काव्य-सञ्चरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ ३०

भावार्थ—जगन्नाथ जी के रथ के सम्मुख संकीर्तन करते हुए अपने भक्तों से घिरे हुए वे दिव्य और आश्चर्यजनक नटराज के रूप में, जो नृत्य करने वालों के सिरताज से लगते थे, दिखाई दिये, जिन्हें देखकर समस्त आए हुए तीर्थयात्री और महाराज प्रतापरुद्र के कुटुम्बी और मित्र अचम्भित से रह गये। अपनी दिव्य शक्ति से उन्होंने श्री जगन्नाथ जी की गुन्डिचा यात्रा का स्वाभाविक और मूल उद्देश्य श्री रूप गोस्वामी के एक काव्य (प्रियः सोऽयम्.....विपिनाय स्पृहयति) के माध्यम से प्रकट कर दिया। पवित्र प्रेम के एक मात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—३१

प्रेम-मुग्ध-रूद्र-राज-शौर्य्य-वीर्य्य-विक्रमं
प्रार्थिताङ्घ्रि-वर्जितान्य-सर्व्व-धर्म्म-सङ्गमम्।
लुण्ठित-प्रताप-शीर्ष-पाद-धूलि-धूसरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ३१

भावार्थ—श्री महाप्रभु के अति ही जाज्वल्यमान दिव्य प्रेमोन्माद को देखकर उत्कल के राजा प्रतापरुद्र आश्चर्यचकित रह गये और उन्होंने अपने समस्त पूर्व निश्चित धार्मिक एवं सैद्धा-

न्तिक मान्यताओं को और अपने शौर्यवीर्य और विक्रम जनित अहंता को तिलाञ्जलि दे दी और तब दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ केवल उनकी कृपाभिक्षा चाहते हुए अपने को महाप्रभु के चरण कमलों में डाल दिया ताकि उनकी चरण-रज का उनके शीश से स्पर्श हो जाये। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—३२

दाक्षिणात्य-सुप्रसिद्ध-पण्डितौघ-पूजितं
श्रेष्ठ-राज-राजपात्र-शीर्ष-भक्ति-भूषितम्।
देश-मातृ-शेष-दर्शनार्थि-गौड़-गोचरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर सुन्दरम्॥ ३२

भावार्थ—जब श्रीमहाप्रभु दक्षिण भारत में थे तब वहाँ के प्रसिद्ध और नामांकित विद्वानों द्वारा पूजे जाते थे और शक्तिशाली राजागण एवं उनके मन्त्री और कुटुम्बीगण उनका अत्यधिक सम्मान करते थे मानो उनके भक्ति-भाव के वे सिरताज हों। तब संन्यासियों की रीति के अनुसार उन्होंने अपनी माता, मातृभूमि और श्री गंगा जी का दर्शन अंतिम बार करने के लिए बंगाल की ओर प्रस्थान किया। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी, स्वर्णिम आभायुक्त श्री

गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लास पूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—३३

गौरगर्व्वि-सर्व्व-गौड़-गौड़वार्थ-सज्जितं
शास्त्र-शस्त्र-दक्ष-दुष्ट-नास्तिकादि-लज्जितम्।
मुह्यमान-मातृकादि-देह-जीव-सञ्चरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर सुन्दरम्॥ ३३

भावार्थ—जैसे-जैसे महाप्रभु की प्रसिद्धि चारों ओर फैली तथा उनके बंगाल में पदार्पण का सम्वाद सबको प्राप्त हुआ, सारा बंगाल उन पर गर्व का अनुभव करता हुआ उनका स्वागत करने के लिए प्रस्तुत हुआ। अहंभाव से ग्रसित कुछ नास्तिक और शंकाशील भी अपनी नीचता के लिए लज्जा अनुभव करने लगे, जब उन्होंने देखा कि किस तरह असंख्य जन समुदाय महाप्रभु का प्रेम पूर्वक स्वागत-सम्मान कर रहा है। आने के बाद उन्होंने अपनी माता एवं अन्य भक्तगणों को जीवनदान दिया जो उनकी विरह वेदना से मरणासन्न हो रहे थे। पवित्र प्रेम के एक मात्र आश्रय, मेरे मधुर स्वामी, स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौरसुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—३४

न्यास-पञ्च-वर्ष-पूर्ण-जन्म-भूमि-दर्शनं
कोटि-कोटि-लोक-लुब्ध-मुग्ध-दृष्टि-कर्षणम् ।
कोटि-कण्ठ-कृष्णनाम-घोष-भेदिताम्बरं
प्रेम-धाम-देव-मेव नौमि-गौर-सुन्दरम् ॥ ३४

भावार्थ—अन्ततोगत्वा पाँच वर्ष के दीर्घकाल के पश्चात् जब वे अपनी मातृभूमि बंगाल में पधारे, तब कोटि-कोटि लोग उनके दर्शन के लिए दौड़ पड़े। भाव विभोर होकर अति उत्सुक नेत्रों से उन्होंने महाप्रभु का, जो सबके चित्त को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे, दर्शन किया। जब कोटि-कोटि लोग बारम्बार हरिबोल, हरिबोल का गगनभेदी निनाद कर रहे थे तब यह पवित्र ध्वनि चहुँदिशाओं में व्याप्त हो गई। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम अभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—३५

आर्त्त-भक्त-शोक-शान्ति-तापि-पापि-पावनं
लक्ष-कोटि-लोक-सङ्ग-कृष्ण-धाम-धावनम् ।
राम-केलि-साग्रजात-रूप-कर्षणादरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ ३५

भावार्थ—अपने भक्तजनों को जो इतने दिनों तक अपने प्रभु को न देख सकने के कारण भग्नहृदय हो रहे थे, आत्मतुष्टि प्रदान करके और अनेकानेक पापियो और तापियो को (जैसे गोपाल चापाल इत्यादि) क्षमा प्रदान कर, उद्धार करके महाप्रभु श्रीकृष्णधाम श्रीवृन्दावन की ओर तेजी से चल पड़े जबकि कोटि-कोटि लोग उनका अनुसरण कर रहे थे। रास्ते में रामकेलि गाँव में श्रीरूप और उनके बड़े भाई सनातन ने श्रीमहाप्रभु को अपनी ओर आकर्षित किया और प्रभु ने उनको अपना प्रेम प्रदान किया। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वार्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हुँ एवं उनको नमन करता हुँ।

स्तोत्र—३६

व्याघ्र-वारणैन-वन्य-जन्तु-कृष्ण-गायकं
प्रेम-नृत्य-भाव-मत्त-झाड़खण्ड-नायकम्।
दुर्ग-वन्य-मार्ग-भट्ट-मात्र-सङ्ग-सौकरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ३६

भावार्थ—महाप्रभु आगे बढ़ते गये और अन्ततोगत्वा वे झाड़खण्ड वन में पहुँच गये जहाँ उन्होंने विस्मयात्मक एवं जादुई ढंग से अपने संग श्री कृष्ण नाम-गान करने के लिए

बाघ, हरिण, हाथी और दूसरे-दूसरे जंगली जानवरों को प्रेरित किया। दिव्य प्रेमोन्माद में मधुर नृत्य करते हुए और दिव्य भाव में उन्मादित महाप्रभु दुर्गम जंगली रास्तों से सिर्फ बलभद्र भट्टाचार्य को साथ लिए हुए आगे बढ़ते चले गये। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ और उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र ३७

गाङ्ग-यामुनादि-विन्दु-माधवादि-माननं
माथुरार्त्त-चित्त-यामुनाग्र-भाग-धावनम्।
स्मारित-व्रजाति-तीव्र-विप्रलम्भ-कातरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर सुन्दरम्॥ ३७

भावार्थ—गंगा और यमुना के तटों पर स्थित श्री प्रयाग और श्री काशी क्षेत्र में उन्होंने कितने ही मन्दिरों का दर्शन किया एवं श्री विंदु माधव और दूसरी-दूसरी प्रतिमाओं को अपनी मान्यता और भाव अर्पण किया। तब जल्द ही श्री मथुरा जी पहुँचने की व्यग्र इच्छा से उन्होंने यमुना नदी के किनारे-किनारे उक्त शहर की तरफ दौड़ना शुरू किया। ज्यों-ज्यों व्रजलीला के भाव उनके मानस पटल पर अंकित हुए वे तीव्र व्रज-विरह-व्यथा

से कातर हो उठे। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी, स्वर्णिम आभा युक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—३८

माधवेन्द्र-विप्रलम्भ-माथुरेष्ट-माननं
प्रेम-धाम-दृष्ट-काम-पूर्व्व-कुञ्ज-काननम्।
गोकुलादि-गोष्ठ-गोप-गोपिका-प्रियङ्करं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ३८

भावार्थ—श्री राधिका की विरह वेदना, जो उनके प्रियतम श्री कृष्ण के मथुरा गमन पर प्रकट हुई थी, को व्यक्त करने वाले श्री माधवेन्द्र पुरी द्वारा रचित पद्य (अयि दीनदयार्द्रनाथ ..... किंरोम्यहम्, मथुरा मथुरा.....मथुरा मथुरा इत्यादि) में विरह रस (विप्रलम्भ) का जो वर्णन है, श्री महाप्रभु ठीक उसी भाव में भावित थे। अन्ततोगत्वा श्री महा प्रभु ने श्री वृन्दावन धाम, जो दिव्य प्रेम का आलय ही है, का अपने चक्षुओं से अवलोकन किया और जहाँ पूर्वकाल में उन्होंने अपनी लीलाएँ की थीं उन कुसुम कानन एवं वन-उपवन के दृश्यों को जी भरकर निरखा। श्री वृन्दावन के द्वादश वनों में उन्होंने वहाँ के गोप

एवं गोपिकाओं के प्रति आत्मिक प्रियता प्रकट की। पवित्र प्रेम के एक मात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी, स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लास पूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—३९

प्रेम-गुञ्जनालि-पुञ्ज-पुष्प-पुञ्ज-रञ्जितं
गीत-नृत्य-दक्ष-पक्षि-वृक्ष-लक्ष-वन्दितम्।
गो-वृषादि-नाद-दीप्त-पूर्व-मोद-मेदुरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ३९

भावार्थ—जैसे-जैसे वे वृन्दावन के गहन कुञ्जों से गुजरते जाते थे, सुन्दर-सुन्दर पुष्प, जिन पर मधु-मक्खियाँ और भौंरे मँडरा रहे थे, प्रेम विभोर हो, उनकी कीर्ति का गान करने लगते थे। पक्षीवृन्द भी अपने गीत और नृत्य द्वारा उनका स्वागत करते थे और हजारों-हजारों वृक्ष झुक झुककर उनका अभिवादन करते थे। किस तरह गाय बछड़े और बैल रँभा रँभाकर उनका आह्वान करते थे, यह स्मृति उनके मन में उदित हो रही थी और उनका हृदय दिव्य प्रेमोन्माद से आप्लावित हो रहा था। इस प्रकार श्री महाप्रभु अपनी पूर्वकालीन लीलाओं का भावोल्लासपूर्वक पुनरास्वादन कर रहे थे। पवित्र

प्रेम के एक मात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी, स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तामन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लास-पूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—४०

प्रेम-बुद्ध-रूढ-बुद्धि-मत्त-नृत्य-कीर्तनं
प्लाविताश्रु-काञ्चनाङ्ग-वास-चातुरङ्गनम्।
कृष्णा-कृष्णा-राव-भाव-हास्य-लास्य-भास्वरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ४०

भावार्थ—दिव्य प्रेम में विभोर उनको वाह्य जगत की चेतना बिल्कुल विस्मृत हो जाती थी और एक उन्मादित व्यक्ति की भाँति वे पुनीत हरिनाम का गान करते हुए नृत्य करने लगते थे। उनके नेत्रों से अविरल अश्रुधारा प्रवाहित हो रही थी जिससे उनके दिव्य स्वर्णिम कलेवर और श्रीवस्त्र स्नान कर रहे थे तथा आसपास की भूमि तक चहुँ दिशि आप्लावित हो चुकी थी। महाभाव से भावित वे अट्टहास करके हँस पड़ते थे और कभी-कभी उनके मुँह से अदमनीय कराह निकल पड़ती थी, "हे कृष्ण, हे कृष्ण"। इस तरह इन विभिन्न लीलाओं द्वारा उनके दिव्य कलेवर की सुन्दरता ज्यादा से ज्यादा मात्रा में निखरी

पड़ती थी। पवित्र प्रेम के एक मात्र आश्रय मेरे मधुर-स्वामी, स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—४१

प्रेम-मुग्ध-नृत्य-कीर्त्तनाकुलारिटान्तिकं
स्नान-धन्य-वारि-धान्य-भूमि-कुराड-देशकम्।
प्रेम-कुराड-राधिकाख्य-शास्त्र-वन्दनादरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ४१

भावार्थ—दिव्य प्रेम में उन्मादित महाप्रभु, श्रीकृष्ण की कीर्ति का गान करते हुए और नृत्य करते हुए पुण्य ताल श्रीराधा-कुण्ड पर पहुँचे। उन्होंने धान्यभूमि के उस जलाशय में स्नान करके उसको धन्य किया और इस तरह इस तथ्य को प्रकाशित किया कि वही स्थान विशेष श्रीराधाकुण्ड है। दिव्य प्रेम के द्योतक उस तालाब के बारे में, जो कृष्णप्रिया श्रीराधारानी के नाम के साथ सम्बन्धित था, शास्त्रों में, जो कीर्तिद्योतक एवं उपासनामय पद्य रचित थे, उनको महाप्रभु ने बहुत ही विनयपूर्वक गाया। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभा-युक्त श्रीगौरसुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—४२

तिन्तिड़ी-तलस्थ-यामुनोर्म्मि-भावनाप्लुतं
निर्जनैक-राधिकात्म-भाव-वैभवावृतम् ।
श्याम-राधिकाप्त-गौर-तत्त्व-भित्तिकाकरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ ४२

भावार्थ—महाप्रभु वृन्दावन की भिन्न-भिन्न लीला-स्थलियों का दर्शन करते हुए उस प्रसिद्ध इमली वृक्ष के पास पहुँचे जो द्वापर युग काल का था। वे उस वृक्ष की छत्रछाया में बैठ गये और श्री यमुना जी की हिलोरें लेती हुई लहरों को देखकर जलकेलि की स्मृति उनके अन्दर जागृत हो गई और श्रीकृष्ण की गोपियों के साथ जो रहस्यमयी जलक्रीड़ा हुई थी, उसकी स्मृति में वे विभोर हो गये। उस एकान्त स्थान में उनका सारा मानस श्रीराधा, उनकी चिन्मयी सुन्दरता एवं माधुर्य से आपूरित हो गया। यही वह स्थान है जहाँ श्री गौरतत्व का प्रादुर्भाव माना जाता है क्योंकि यहीं श्री श्यामसुन्दर, श्रीमती राधा रानी के प्रेमोन्माद में पूर्णतया उन्मादित, अतः श्रीराधा से एकाकार हो गये थे। श्री महाप्रभु जो कि समस्त भगवत् स्वरूपों के प्रादुर्भाव स्रोत भी हैं, यहाँ नित्य ही विराजित भी रहते हैं। यहाँ श्री महाप्रभु में विरुद्ध धर्माश्रयता गुण दिखलाया गया है जो कि केवल भगवत् तत्व में ही सम्भव है, जीवतत्व में बिल्कुल ही सम्भव नहीं है, जैसे भगवान एक होते हुए भी अनेक,

सगुण होते हुए भी निर्गुण, साकार होते हुए भी निराकार एवं अजन्मा एवं नित्य होते हुए भी जन्म लेते हुए से दिखलाई देते हैं वैसे ही श्री महाप्रभु का नित्य विराजित रहना एवं प्रादुर्भाव स्थल का होना भी समझना चाहिए। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्रीगौरसुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—४३

शारिका-शुकोक्ति-कौतुकाढ्य-लास्य-लापितं
राधिका-व्यतीत-कामदेव-काम-मोहितम्।
प्रेम-वश्य-कृष्ण-भाव-भक्त-हृच्चमत्करं
प्रेम-धाम-देव-मेव नौमि-गौर-सुन्दरम्॥ ४३

भावार्थ—शुक और सारिका के मध्य आपस के हास्य और बुद्धिमत्तापूर्ण वार्तालाप के महाप्रभु विषय बन गये जबकि उस वार्ता के बीच यह वर्णित हुआ कि सर्वोपरि चिन्मय कामदेव श्रीकृष्ण जो मन्मथ के मन को भी मथ डालते हैं, स्वयं ही श्री राधिका के विरह तथा यादगार में मथित हो रहे हैं। इस वार्तालाप के माध्यम से महाप्रभु ने भक्तों के हृदय को आश्चर्य-चकित कर दिया, जब उससे यह निष्कर्ष निकला कि श्रीकृष्ण इतने बड़े प्रेमी हैं कि वे प्रेम से जीते भी जा सकते हैं। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लास-पूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र —४४

श्रीप्रयाग-धाम-रूप-राग-भक्ति-सञ्चरं
श्रीसनातनादि-काशि-भक्ति-शिक्षनादरम् ।
वैष्णवानुरोध-भेद-निर्विशेष-पञ्जरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ ४४

भावार्थ—प्रयाग धाम में महाप्रभु ने श्रीरूप गोस्वामी को वृन्दावन के दिव्य तत्व प्रेम के साधन और साध्य को हृदयंगम करने और प्रतिपादित करने की भी क्षमता प्रदान की। श्री काशी-धाम में श्री महाप्रभु ने प्रेम पूर्वक श्री सनातन गोस्वामी और और दूसरे-दूसरे लोगों को विशुद्ध भक्ति के सिद्धान्त और उनको प्राप्त करने के साधन से अवगत कराया। वहाँ अपने कतिपय वैष्णव भक्तों की प्रार्थना पर उन्होंने कुछ निर्विशेषवादी संकुचित मनोवृत्ति परायण लोगों का, जो अहंग्रहोपासना में विश्वास रखते थे, दंभ ध्वस्त-विध्वस्त कर दिया और इस तरह परब्रह्म की भक्ति का मार्ग उनके लिए उन्मुक्त कर दिया। पवित्र प्रेम के एक मात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लास पूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—४५

न्यासि-लक्ष-नायक-प्रकाशानन्द-तारकं
न्यासि-राशि-काशि-वासि-कृष्ण-नाम-पारकम् ।

व्यास-नारदादि-दत्त-वेदधी-धुरन्धरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ ४५

भावार्थ—प्रकाशनन्द सरस्वती, जो लाखों मायावादी सन्यासियों के आचार्य थे, का महाप्रभु ने निर्विशेषवाद के गर्त से उद्धार करने के पश्चात् काशी के अन्य लोगों को, जो मुख्यतया सन्यासी थे, श्री कृष्ण नाम का दिव्यदान देकर जन्म मृत्यु के चक्कर से बचा दिया। वैदिक शास्त्रों के दिव्य अमृतमय उपदेशों का जो निष्कर्ष नारद तथा व्यास द्वारा गुरु शिष्य परम्परा के माध्यम से दिया गया था उसके तो महाप्रभु मानों दिव्य आधार स्तम्भ ही थे। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौरसुन्दर, की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लास पूर्वक गान, करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—४६

ब्रह्म-सूत्र-भाष्य-कृष्ण-नारदोपदेशकं
श्लोक-तुर्य्य-भाषणान्त-कृष्ण-सम्प्रकाशकम्।
शब्द-वर्त्तनान्त-हेतु-नाम-जीव-निस्तरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर सुन्दरम् ॥ ४६

भावार्थ—काशीधाम में मायावादी सन्यासियों की सभा में उन्होंने यह उपदेश किया कि श्रीमद्भागवतम् ब्रह्मसूत्र का स्वाभाविक भाष्य है जो कि वस्तुतः गुरु शिष्य परम्परा द्वारा श्री कृष्ण से ब्रह्मा को, उनसे नारद को, दिया जाकर चला आ रहा है। चतुः श्लोकी मूल भागवत् की व्याख्या से उन्होंने चमत्कारिता पूर्वक यह तथ्य स्थापित किया कि स्वयंप्रकाशमान दूसरों को प्रकाशित करने वाले अद्वैत परम सत्य परम पुरुष परमात्मा श्री कृष्ण ही हैं। उन्होंने यह निश्चयात्मक निष्कर्ष प्रकाशित किया कि सिर्फ शब्द ब्रह्म यानी श्री कृष्ण के नामों की दिव्य ध्वनि ही जन्म मृत्यु के चक्कर से जीवों का निस्तार करने में समर्थ है। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लास पूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूं।

स्तोत्र—४७

आत्म-राम-वाचनादि-निर्विशेष-खण्डनं
श्रौत-वाक्य-सार्थकैक-चिद्विलास-मण्डनम्।
दिव्य-कृष्ण-विग्रहादि-गौण-बुद्धि-धिक्करं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ४७

भावार्थ—श्रीमद् भागवतम् के प्रसिद्ध श्लोक (आत्माराम

श्च मुनयोः ... ...गुणोहरि) की एकसठ प्रकार से व्याख्या करके उन्होंने श्री शंकराचार्य के निर्विशेषवादी सिद्धान्त की धज्जियाँ उड़ा दीं। शास्त्रों के भिन्न भिन्न प्रमाण देकर उन्होंने परम प्रभु की मधुर-मधुर दिव्य लीलाओं को प्रकाशित किया। अत्यन्त जोरों के साथ उन्होंने इस घृणास्पद सिद्धान्त का खण्डन किया कि श्री कृष्ण के विभिन्न उपास्य स्वरूप सत्यगुण पर आधारित सिर्फ मायिक हैं। पवित्र प्रेम के एक मात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्गिय आभायुक्त श्री गौरसुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लास पूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—४८

ब्रह्म–पारमात्म्य–लक्षणाद्वयैक-वाचनं
श्रीव्रज-स्वसिद्ध–नन्दलील–नन्द-नन्दनम्।
श्रीरस-स्वरूप-रास-लील-गोप-सुन्दरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ४८

भावार्थ—श्रीमद् भागवतम् के पद्य (ब्रह्मेति परमात्मेति भगवान इति शब्द्यते) का हवाला देकर श्री महाप्रभु ने दिखलाया कि किस तरह भगवान तत्व जो कि परम सत्य के ज्ञान

का सार, सब आध्यात्मिक सम्बन्धों का द्योतक मौलिक सिद्धान्त तथा परम पुरुष परमात्मा स्वयं का भी द्योतक है और जिसमें ब्रह्म और परमात्मतत्व जो कि क्रमशः ज्ञानियों एवं योगियों द्वारा अपने अन्तिम साध्य तत्व माने जाते हैं, समाये हुए हैं और फिर भी इन ब्रह्म और परमात्मतत्वों से भगवान तत्व कुछ ज्यादा विशेषता ही रखता है।

स्वयं प्रकाशित, गोपनीय एवं आनन्ददायक लीलाओं की ओर इङ्गित करते हुए श्री महाप्रभु ने दिखाया कि किस तरह सर्वोपरि, अचिन्त्य और अन्तिम सत्य नित्य वृन्दावन धाम में, जो कि निश्चय ही वैकुण्ठ से उच्चतर स्तर पर है (वैकुंठात् जनितो वरा मधुपुरी) स्वयं परम पुरुष परमात्मा नन्दनंदन, अपने दिव्य पुत्र भाव को निभाने के लिए एवं दिव्य रसास्वादन करने के लिए विराजित रहते हैं।

अन्ततोगत्वा रासतत्व के पूर्ण भाव को आस्तिकता के पूर्ण विकास के रूप में दिखाते हुए श्री महाप्रभु ने यह दिखाया कि माधुर्य भाव जो कि प्रधान मूल एवं सब रसों का सार है और जिसकी चरम परिणति श्री रास के रूप में हुई है, के दिव्य भावोल्लास का चरम रसास्वादन करने के लिए गोप कुमार श्री श्याम सुन्दर ने स्वयं ही नायक व नायिका का भाव स्वीकार किया है। साथ ही साथ उन्होंने यह भी दिखाया कि दिव्य प्रेममयी रासलीला, जो कि अनिर्वचनीय, अचिन्त्य, अनन्त, सौन्दर्य माधुर्य, ऐश्वर्य, शौर्य एवं सद्गुण-रस-सुधानिधि प्रभु की निजी

शक्ति द्वारा संचालित होती है, जीवों का उच्चतम साध्य तत्व है। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौरसुन्दर की अनन्तानन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—४६

राधिका-विनोद-मात्र-तत्त्व-लक्षणान्वयं
साधुसङ्ग-कृष्ण-नाम-साधनैक-निश्चयम्।
प्रेम-सेवनैक-मात्र-साध्य-कृष्ण-तत्परं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ४६

भावार्थ— विद्वानों की मंडली में उन्होंने यह दिखाया कि राधा विनोद (परम प्रभु जो कि श्रीमती राधारानी के साथ हरदम पूर्ण प्रेम लीला में लीन रहते हैं) ही एकमात्र सम्बन्ध तत्व या सर्व आध्यात्मिक सम्बन्धों का एक मात्र सार तत्व है, जो कि गुरु शिष्य परम्परा से प्राप्त होता है। उन्होंने यह भी निश्चय करके दिखाया कि संत मंडली में श्री कृष्णनाम संकीर्तन ही निश्चित रूप से एकमात्र साधन (अभिधेय) है जिससे कि परम उच्चतम साध्य तत्व (प्रयोजन) श्रीमती राधिका प्रियतम, गोपीजनवल्लभ श्रीकृष्ण की प्रेममयी सेवा प्राप्त हो

सकती है। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—५०

आत्म-राम-वाचनैक-षष्टिकार्थ-दर्शितं
रुद्र-संख्य-शब्द-जात-यद्यदर्थ-सम्भृतम्।
सर्व्व-सर्व्व-युक्त-तत्तदर्थ-भूरिदाकरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ५०

भावार्थ—महाप्रभु ने श्रीमद्भागवतम् के प्रसिद्ध "आत्माराम" पद्य के एकसठ प्रकार के अर्थ करके दिखाये। अलग-अलग करके एक, के बाद एक, प्रत्येक एकादश शब्दों के भिन्न-भिन्न अन्तरस्थ अर्थों को युक्त करके उन्होंने यह दिखाया कि यह पद्य शुद्ध भक्ति के सैद्धांतिक तत्वों अथवा प्रेम भक्ति के निष्कर्षों से भरा-पूरा एक खजाना है। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लास पूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—५१

श्रीसनातनानु-रूप-जीव-सम्प्रदायकं
लुप्त-तीर्थ-शुद्ध-भक्ति-शास्त्र-सुप्रचारकम् ।
नील-शैल-नाथ-पीठ-नैज-कार्य्य-सौकरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर सुन्दरम् ॥ ५१

भावार्थ—श्री महाप्रभु ने अपने सम्प्रदाय की स्थापना और उसका प्रकाश श्री सनातन, उनके छोटे भाई श्री रूप एवं श्र जीवादि गोस्वामी वर्ग और उनके अन्य साथियों के माध्यम से किया। वे कई पवित्र तीर्थों के स्थान विशेषों को प्रकाश में लाये एवं उन्होंने विशुद्ध भक्ति को दर्शाने वाले शुद्ध भक्ति शास्त्रों क पूरांता से उपदेश किया। उन्होने नीलाचल में श्री जगन्नाथ देव के सेवकों के सामने प्रेम पूर्वक अपने प्रति उपासना के सच्चे तत्व को दर्शाया। पवित्र प्रेम के एक मात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लास पूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूं।

स्तोत्र—५२

त्याग-वाह्य-भोग-बुद्धि-तीव्र-दण्ड-निन्दनं
राय-शुद्ध-कृष्ण-काम-सेवनाभि-नन्दनम् ।

राय-राग-सेवनोक्त-भाग्य-कोटि-दुस्करं
प्रेम-धाम-देवमेव-नौमि-गौर-सुन्दरम् ॥ ५२

भावार्थ—उन्होंने उन लोगों की जो वाह्य रूप से अपने को त्यागी बतलाते हैं एवं दर्शाते हैं किन्तु गुप्तरूप से अपने हृदय में जड़ वासनाओं का पोषण करते हैं, तीव्र शब्दों में निन्दा की तो भी उन्होंने महान वैष्णव श्री रामानन्द राय के निर्मल, गुह्य, कृष्ण सेवा से भावित राग भक्तिमय श्री जगन्नाथ देव की देव-दासियों के प्रति व्यवहार को, जब वे उन्हे नृत्यनाटक करने की कला सिखाते थे, की प्रशंसा की। उन्होने पुनः पुनः यह तथ्य प्रकट किया कि जैसा सुयोग श्री रामानन्द राय को राग मार्ग से प्रभु की सेवा करने का प्राप्त हुआ है, वह बहुत ही दुर्लभ है और करोड़ों जन्मों की संचित सुकृति का फल है. पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लास पूर्वक गान करता हूं एवं उनको नमन करता हूं।

स्तोत्र—५३

श्रीप्रयाग-भट्ट-वल्लभैक-निष्ट-सेवनं
नील-शैल-भट्ट-दत्त-राग-मार्ग-राधनम्।
श्रीगदाधरार्पिताधिकार-मन्त्र-माधुरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ ५३

भावार्थ—एक बार शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय के महान् वैष्णव आचार्य श्री बल्लभभट्ट ने (जो आन्ध्र प्रदेश के थे) श्री महाप्रभु की एकांतिक निष्ठा व भक्ति के साथ अपने प्रयागधाम स्थित घर में सेवा की थी। आगे चलकर श्री पुरुषोत्तम क्षेत्र में श्रीमहाप्रभु ने उन्हें नवयौवन प्राप्त श्रीकृष्ण की मधुर भाव से सेवा प्राप्त करने का सुयोग प्रदान किया और एतदर्थ उनके लिए श्री गदाधर पंडित के माध्यम से आवश्यक शास्त्रीय मंत्र अध्ययन की व्यवस्था कर दी। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्रीगौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—५४

श्रीस्वरूप-राय-सङ्ग-गाम्भिरान्त्य-लीलनं
द्वादशाब्द-वह्नि-गर्भ-विप्रलम्भ-शीलनम्।
राधिकाधिरूढ़-भाव-कान्ति-कृष्ण-कुञ्जरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ ५४

भावार्थ—उनकी लीलाओं की चरम परिणति उनके सबसे निकटस्थ साथी द्वय श्रीस्वरूप दामोदर और श्री रामानन्द राय की सन्निधि में गम्भीरा लीला के समय हुई। दीर्घ बारह वर्षों तक वे श्री कृष्ण की तीव्र विरह वेदना में जलते रहे और

उस विरह रस का वे अपने साथियों के साथ चिन्तन, मनन और रसास्वादन करते रहे। साथ साथ वे एक मत्त हाथी की तरह श्री राधा प्रेम में मदोन्मत्त रहते थे और उनके रोम रोम से राधाभाव प्रवाहित, प्रसारित एवं प्रतिध्वनित होता रहता था क्योंकि वे स्वयं श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण ही थे जो कि श्रीराधिका की अंग कान्ति और द्युति से जाज्वल्यमान हो रहे थे। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी, स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लास पूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—५५

श्रीस्वरूप-कण्ठ-लग्न-माथुर-प्रलापकं
राधिकानु-वेदनार्त्त-तीव्र-विप्रलम्भकम्।
स्वप्नवत्-समाधि-दृष्ट-दिव्य-वर्णनातुरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर सुन्दरम्॥ ५५

भावार्थ—श्रीस्वरूप दामोदर के गले से चिपट कर वे उन शब्दों को अति ही दीनता पूर्वक गाने लगते थे जो श्रीराधिका के मुंह से श्रीकृष्ण के मथुरा गमन के पश्चात् निकले थे। श्री राधारानी को जो कृष्ण की तीव्र और असह्यनीय विरह वेदना

का अनुभव हुआ था, श्री महाप्रभु उसी का आस्वादन कर रहे थे। अति ही भारयुक्त हृदय से वे उन अनुभूतियों का बखान करते जाते थे, जो श्रीराधाकृष्ण की दिव्य लीलाओं में निमग्न रहते समय उनको हुआ करती थी और जो इन दिव्य भावमयी अवस्थाओं से अनभिज्ञ व्यक्तियों के लिए मात्र एक दिवास्वप्न ही थी। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—५६

सात्विकादि-भाव-चिह्न-देह-दिव्य-सौष्ठवं
कुर्म्मधर्म्म-भिन्न-सन्धि-गात्र-पुष्प-पेलवम्।
ह्रस्व-दीर्घ-पद्म-गन्ध-रक्त-पीत-पाण्डुरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ५६

भावार्थ—दिव्य प्रेममय अष्ट सात्विक भावों के प्राकट्य ने तो मानो उनके दिव्य कलेवर की सुन्दरता में चार चाँद ही लगा दिये हों। कभी एक कछुए की भाँति वे अपने श्री अंगों को अपने शरीर के अन्दर समेट लिया करते थे और कभी-कभी उनका शरीर साधारण अवस्था की अपेक्षा ज्यादा लम्बाई धारण कर लेता था, क्योंकि उनकी संधि-संधि खुल जाती थी और ढीली पड़ जाती थी। कभी उनका शरीर पुष्पवत् कोमल हो जाता था, कभी वह रक्त वर्ण, कभी पीत वर्ण और कभी

मल्लिका फूल की धवलिका को भी लजाने वाली धवलिका धारण कर अति ही सुन्दर प्रतीत होने लगता था। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लास-पूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—५७

तीव्र-विप्रलम्भ-मुग्ध-मन्दिराग्र-धावितं
कुर्म्म-रूप-दिव्य-गन्ध-लुब्ध-धेनु-वेष्टितम्।
वर्णितालि-कूल-कृष्ण-केलि-शैल-कन्दरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ५७

भावार्थ—तीव्र विरह वेदना से उन्मादित श्री महाप्रभु श्री जगन्नाथ मन्दिर के मुख्य द्वार की तरफ दौड़ पड़े। उसी भावोन्मादित अवस्था में वे जमीन पर बेसुध गिर पड़े और उनके श्रीअंग उनके शरीर के अन्दर इस तरह सिमट कर घुस गये मानो वे श्री कच्छपावतार के कच्छप ही हों। उनके दिव्य शरीर से जो दिव्य सुगन्ध निकल रही थी उससे आकर्षित होकर तैलंगी गायों ने उनको घेर रक्खा था। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—५८

इन्दु-सिन्धु-नृत्य-दीप्त-कृष्ण-केलि-मोहितं
ऊर्म्मि-शीर्ष-सुप्त-देह-वात-रङ्ग-वाहितम् ।
यामुनालि-कृष्ण-केलि-मग्न-सौख्य-सागरं
प्रेम-धाम देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ ५८

भावार्थ—एक बार जब रात को चन्द्र ज्योत्सना छिटक रही थी, अपने परिकरों के साथ समुद्र तट पर विचरते हुए और दिव्य श्रीकृष्ण लीलामृत का पान करते हुए अचानक जब श्रीमहाप्रभु ने समुद्र की लहरियों पर चन्द्र प्रतिबिम्ब को नृत्य करते हुए देखा तब उनके मानस धरातल पर श्रीकृष्ण की दिव्य प्रेममयी श्रीयमुना जल विहार लीला की स्मृति जाग पड़ी और उससे उन्मादित वे उसी स्थल पर बेसुध होकर गिर पड़े। दूसरे ही क्षण जब दूसरे-दूसरे परिकर इधर नहीं देख रहे थे, श्री महाप्रभु का दिव्य कलेवर जो कि सुखमयी निद्रा में सोता हुआ-सा लग रहा था (और उनके दिव्य भावोन्मादमयी अवस्था के कारण बिल्कुल हल्का और एक शुष्क काष्ठ खंडवत् समुद्र की लहरियों पर तैरने के लायक हो गया था) हवा के एक झोंके के साथ समुद्र की लहरियों पर तरंगित होने लगा। उस समय उन्होंने सखियों के साथ होती हुई श्री कृष्ण की दिव्य, चिन्मय यमुना जल-विहार-लीला को प्रत्यक्ष देखा और वे एक अमित अथाह अनिवर्चनीय अपार अचिन्त्य और असीम सौंदर्य, माधुर्य, ऐश्वर्य,शौर्य और सद्गुण रस सुधानिधि भाव समुद्र में निमग्न हो गये। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी, स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—५९

रात्रि-शेष-सौम्य-वेश-शायितार्द्र-सैकतं
भिन्न-सन्धि-दीर्घ-देह-पेलवाति-दैवतम् ।
श्रान्त-भक्त-चक्रतीर्थ-हृष्ट-दृष्टि-गोचरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ ५९

भावार्थ—रातभर श्रीमहाप्रभु को खोजते रहने के कारण क्लान्त उनके परिकरों ने अन्ततोगत्वा रात्रि के शेष भाग में उन्हें चक्रतीर्थ के गीले बालुखण्ड पर एक प्रशान्त प्रतिमूर्ति की तरह सोया हुआ-सा पाया। उनका दिव्य सुगठित कलेवर जो कि निद्रावस्था में विश्राम-सा करता हुआ मालूम पड़ता था, कुछ ज्यादा लम्बा-सा हो गया था क्योंकि उनकी संधियाँ खुल कर ढीली हो गई थीं। जब उनके भक्तों ने इस तरह अपने स्वामी का दर्शन किया, उनका हृदय आह्लाद और आनन्द विभोर हो गया। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—६०

आर्त्त-भक्त-कण्ठ-कृष्ण-नाम-कर्ण-हृद्गतं
लग्न-सन्धि-सुष्ठु-देह-सर्व्व-पूर्व-सम्मतम् ।
अर्द्ध-बाह्य-भाव-कृष्ण-केलि-वर्णनातुरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ ६०

भावार्थ—जब अत्यन्त चिन्तामग्न भक्तमंडली के जोरों से होते हुए कृष्ण नाम संकीर्तन ने महाप्रभु के कर्ण-कुहर से प्रवेश

पाकर हृदय-देश का स्पर्श किया तब उनकी खुली हुई संधियाँ पुनः पूर्व कालीन स्वाभाविक अवस्था को प्राप्त हो गईं। उनका पूर्व कालीन सहज सुन्दर स्वरूप भी पूर्ववत् हो गया और अर्द्ध चेतनावस्था में ही विरहजन्य भारी हृदय से महाप्रभु ने उन विभिन्न दिव्य एवं चिन्मय कृष्ण लीलाओं का बखान करना शुरू किया, जो उन्होंने अपनी दिव्य भावमयी अवस्था में देखी थी। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—६१

यामुनाम्बु-कृष्ण-राधिकालि-केलि-मण्डलं
व्यक्त-गुप्त-दृप्त-तृप्त-भङ्गि-मादनाकुलम्।
गूढ़-दिव्य-मर्म्म-मोद-मूर्च्छना-चमत्करं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ६१

भावार्थ—श्री वृन्दावन में श्री राधाकृष्ण एवं सखियों की दिव्य यमुना जल-केलि-लीलाएँ हृदय एवं मस्तिष्क को दिव्य प्रेममय मधुर भावों से मोह लेती हैं, जो भाव कभी प्रकट कभी प्रच्छन्न कभी चमत्कारी और कभी प्रेममय संकेतों से पूर्ण आत्म-तुष्टि को देने वाले होते हैं और इस गुह्य आह्लादकारी दिव्य लोक की हृद्तंत्री के तारों को दिव्य स्वर लहरी से झंकृत करने वाली एवं संपूर्ण जगत् को आश्चर्य में डाल देने वाली तान को श्री महाप्रभु ने ही इस संसार में प्रसारित किया। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—६२

आस्य-घर्षणादि-चाटकाद्रि-सिन्धु-लीलनं
भक्त-मर्म-भेदि-तीव्र-दुःख-सौख्य-खेलनं ।
अत्यचिन्त्य-दिव्य-वैभवाश्रितैक-शङ्करं
प्रेम-धाम-देव-मेव नौमि-गौर-सुन्दरम् ॥ ६२

भावार्थ—चातक पर्वत को देखकर असह्य विरह-वेदना से वे अपना मुख कमल जमीन पर मर्दन करने लगते थे (क्योंकि इस पर्वत को देखकर उनको श्री गोवर्धन पर्वत की स्मृति जागृत हो जाती थी) एवं व्रज जल-विहार-लीला की स्मृति आने पर वे समुद्र में कूद पड़ते थे और दिव्य प्रेमोन्माद के चिह्न उनमें प्रकट हो जाते थे। इन दिव्य संकेतों से वे भक्त मंडली के हृदय-देश में अथाह चिन्मय एवं दिव्य कृष्ण प्रेम भाव समुद्र की अनिर्वचनीय लहरियों का स्पर्श करा देते थे, जो कभी आनन्द और कभी वेदना का सृजन करने में सक्षम होती थी। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—६३

श्रोत्र-नेत्र-गत्यतीत-बोध-रोधिताद्भुतं
प्रेम-लभ्य-भाव-सिद्ध-चेतना-चमत्कृतम् ।
ब्रह्म-शम्भु-वेद-तत्र-मृग्य-सत्य-सुन्दरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ ६३

भावार्थ—श्री गौरांग महाप्रभु दृष्टि और श्रोत्र शक्ति से अतीत हैं, बुद्धि की तीव्रता भी वहाँ पहुँचकर निष्क्रिय हो जाती है। जो आत्माराम हैं अथवा अपने पर नियन्त्रण प्राप्त करने की क्षमता प्राप्त कर चुके हैं, महाप्रभु उनको भी स्तम्भित कर देते हैं और अपने प्रेम के वशीभूत कर लेते हैं, सारांश यह कि कोई भी अपनी किसी भी विशेषता से महाप्रभु को नहीं जीत सकता, वे तो केवल प्रेम से ही जीते जा सकते हैं। ब्रह्मा और शंकर भी जिन्होंने क्रमशः वेद और तंत्र शास्त्रों का प्रकाश किया है, उन परम प्रभु को खोज ही रहे हैं। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूं।

स्तोत्र—६४

विप्र-शूद्र-विज्ञ-मूर्ख-यावनादि-नामदं
वित्त-विक्रमोच्च-नीच सज्जनैक-सम्पदम्।
स्त्री-पुमादि-निर्विवाद-सार्ववादिकोद्धरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ६४

भावार्थ—उन्होंने ब्राह्मण हो या शूद्र, मूर्ख हो या विद्वान् एवं यवन हो या अनार्य सब को पुनीत कर दिया। जो सज्जन एवं सच्चे जीव थे, चाहे वे धनी हों या गरीब, कुलीन हों या नीच, उन सबकी महाप्रभु उच्चतम सच्ची सम्पत्ति थे। निर्विवाद रूप से

सबके द्वारा यह माना जाता है कि जड़ जगत हो या चिन्मय दिव्य लोक दोनों के समस्त जीवों के महाप्रभु उद्धारक हैं। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभा-युक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—६५

सिन्धु-शून्य-वेद—चन्द्र-शाक-कुम्भ-पूर्णिमा
सान्ध्य-चान्द्रकोपराग-जात-गौर-चन्द्रमा।
स्नान-दान-कृष्णनाम-सङ्ग-तत्-परात्परं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ६५

भावार्थ—शकाब्द १४०७ फाल्गुन मास में पूर्ण चन्द्र की संध्या समय चन्द्र ग्रहण के प्रारम्भिक काल में परब्रह्म एवं अन्तिम सत्य श्री गौर चन्द्र चन्द्रमा की भाँति ही उदित हुए। सब के हृदय आनन्द विभोर हो गये और कई रत्ना दिक एवं मूल्यवान उपहार प्रभु को अर्पण किए गए एवं सर्व दि शाओं में उदारता-पूर्वक दान दिया जाने लगा। अनन्त-अनन्त लोगों ने पुण्य सलिला गंगा में स्नान किया और सर्वोपरि, पुनीत हरिनाम संकीर्तन की जोरों की ध्वनि से दिशाएँ गूँज उठीं। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लास-पूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—६६

आत्म-सिद्ध-सावलील-पूर्ण-सौख्य-लक्षणं
स्वानुभाव-मत्त-नृत्य-कीर्त्तनात्म-वन्दनम्
अद्वयैक-लक्ष्य-पूर्ण-तत्त्व-तत्-परात्परं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ ६६

भावार्थ—पूर्णतम सहज आनन्द, जो कि स्वभाविकी प्रेम लीलाओं से परिपूर्ण है, के तो वे स्रोत ही थे। उनके उन्माद-मय चिन्मय भावोल्लास की चरम परिणति नृत्य रूप में एवं चिन्मय आनन्द के आस्वादन एवं वितरण की चरम परिणति हरिगुणगान एवं संकीर्तन में होती थी। ये दोनों गुण उन परा-त्पर पूर्ण सत्य तत्व के दो स्वाभाविक एवं मूलभूत लक्षण हैं इसीलिये न कोई उनके समान है, न अधिक यानी वे असमोर्ध्व हैं क्योंकि वे ही परात्पर अन्तिम सत्य हैं। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—६७

श्रीपुरीश्वरानुकम्पि-लब्ध-दीक्ष-दैवतं
केशवाख्य-भारती-सकाश-केश-रक्षितम्।
माधवानुधी-किशोर-कृष्ण-सेवनादरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर सुन्दरम् ॥ ६७

भावार्थ—उन्होंने श्री ईश्वरपुरी पर कृपा की और उनसे दीक्षाग्रहण कर उनको धन्य किया। उन्होंने श्री केशव भारती से संन्यास दीक्षा ग्रहण करके संन्यासी के वस्त्र धारण किए और अपने लम्बे सुन्दर बालों को कटा डाला। उन्होंने मधुर भावों में किशोर कृष्ण के प्रति शुद्धाभक्ति का आदर किया और इसको मान्यता दी, जिसको श्री माधवेन्द्र पुरी अति उच्चतम सेवा बतला चुके थे। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौरसुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गाना करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—६८

सिन्धु-विन्दु-वेद-चन्द्र-शाक-फाल्गुनोदितं
न्यास-सोम-नेत्र-वेद-चन्द्र-शाक-बोधितम्।
वाण-वाण-वेद-चन्द्र शाक लोचनातरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम्॥ ६८

भावार्थ—चन्द्रमा की भांति स्वर्णिम आभायुक्त महाप्रभु श्री गौर सुन्दर गौड़ (मायापुर) के आकाश में शकाब्द १४०७ में उदित हुए। उन्होंने शकाब्द १४३१ में संन्यास ग्रहण किया और शकाब्द १४५५ में वे अन्तर्ध्यान हो गये। पवित्र प्रेम के एक मात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—६९

श्रीस्वरूप-राय-सङ्ग-हर्ष-शेष-घोषणं
शिक्षणाष्टकाख्य-कृष्ण-कीर्त्तनैक-पोषणम् ।
प्रेम-नाम-मात्र-विश्वजीवनैक-सम्भरं
प्रेम-धाम-देवमेव नौमि गौर-सुन्दरम् ॥ ६९

भावार्थ—अत्यन्त हर्षपूर्वक महाप्रभु ने अपने निकटतम प्रियजन श्री स्वरूप दामोदर और रामानन्द राय से कहा कि कलिकाल में जीवों के कल्याण का सर्वोत्तम साधन श्री कृष्णनाम संकीर्तन ही है ("हर्षे प्रभु कहे सुन स्वरूप राम राय, नाम संकीर्तन कलौ परम उपाय") अपने प्रसिद्ध शिक्षाष्टक में उन्होंने श्री कृष्ण-नाम संकीर्तन को सर्वोपरि स्थान दिया है, उन्होंने यह निश्चया-त्मक निष्कर्ष दिया कि भक्तिभावपूर्वक कृष्णनाम संकीर्तन ही जगत में जीवों के लिए एकमात्र सहारा और अवलम्ब है। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लास-पूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—७०

प्रेम हेम-देव देहि दासरेष मन्यतां
क्षम्यतां महापराध-राशिरेष-गण्यताम् ।
रूप किङ्करेषु रामानन्द दास सम्भरं
प्रेम-धाम-देवमेव-नौमि-गौर-सुन्दरम् ॥ ७०

भावार्थ - हे मेरे स्वर्णिम आभायुक्त स्वामी ! हे प्रेम के सागर ! आप अपने प्रेम भंडार का दान दीजिए। कृपया इस पतित जीव की तरफ भी ध्यान दीजिए और मेरे अनंतानन्त अपराधों को क्षमा कीजिए। कृपया इस जीव को अपने निकटतम और प्रिय परिकर श्री रूप गोस्वामी के दासों में एक दास के रूप में स्वीकार कीजिए। हे स्वामी ! इस रामानन्द दास के केवल आपही एक सहारा और सद्भाग्य-सृजनहार हैं। पवित्र प्रेम के एकमात्र आश्रय मेरे मधुर स्वामी स्वर्णिम आभायुक्त श्री गौर सुन्दर की अनन्तानन्त दिव्य विभूतियों का मैं हर्षोल्लासपूर्वक गान करता हूँ एवं उनको नमन करता हूँ।

स्तोत्र—७१

सश्रद्धः सप्त-दशकं प्रेम-धामेति-नामकम्।
स्तवं कोऽपि पठन् गौरं राधाश्याममयं-व्रजेत् ॥ ७१

भावार्थ—प्रेम धाम देव स्तोत्रम् नामक इन ७० पद्यों का जो पठन, स्तवन एवं श्रद्धा प्रेम सहित गान करता है, वह निश्चय ही श्री गौर सुन्दर, जो कि श्री राधाभाव तथा द्युति से युक्त स्वयं श्री श्याम सुन्दर ही हैं, की प्रेम एवं भावमयी भक्ति को प्राप्त होगा।

स्तोत्र—७२

पञ्चमे शतगौराब्दे श्रीसिद्धान्त-सरस्वती।
श्रीधरः कोऽपि-तच्छिष्यस्त्रिदण्डी नौति सुन्दरम् ॥ ७२

भावार्थ—गौराब्द ५०० में इस स्तोत्र की रचना श्री सिद्धान्त सरस्वती के शिष्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीधरदेव ने की है।

॥ इति समाप्तम् ॥